

171-
itindu-
victu.

कववायकुं ॥ उं क्रीं नमः ग्यायत्रीष्ट ॥ उं कुं ॥ अमुं य
कुं ॥ ॐ नमः ॥ ॥ ता का उं ययुं ॥ कर्मन ॥
उं क्रीं दय या यन नमः ॥ क्रीं नि वसनमः ॥ कुं नि खा यन
मः ॥ कुं कववायनमः ॥ क्रीं नमः ॥ कुं अमुं य
कुं ॥ वन मा कत धन मः ॥ दग य ॥ लेखन कति का
य ॥ ॥ यथा श्रुति ॥ उं क्रीं मः ॥ यथा यन मः
॥ ३ ॥ वलि ॥ वागी दवी मः ॥ ता यवलि ॥ उं क्रीं २ ॥ वा का ॥
जाय ॥ उं क्रीं मः ॥ वा का ॥ १२ ॥ कर्मन ॥ ॐ नि मृ य

युजा ॥ ॥ अथ विष्णु युजा ॥ यथा श्रुति ॥ उं क्रीं मः
नमः ॥ ना वा यथा यविष्णु मः ॥ क्रीं वा का ॥ ३ ॥ वलि ॥ ले
खी मः ॥ ता यवलि ॥ उं क्रीं २ ॥ वा का ॥ जाय ॥ उं क्रीं मः ॥ वा का ॥
१२ ॥ कर्मन ॥ ॐ नि मृ य वा वन ॥ ॥ अथ नि वद वा
वन ॥ यथा श्रुति ॥ ॥ उं क्रीं मः ॥ यथा नि वा यन मः ॥
॥ ३ ॥ वलि ॥ वागी दवी मः ॥ ता यवलि ॥ उं क्रीं २ ॥ वा का ॥
जाय ॥ उं क्रीं मः ॥ वा का ॥ १२ ॥ मृ गल मः ॥ ॥ अवा कर्म मः ॥
कर्म का यथ मः ॥ दू ति ॥ तमी लि मः ॥ यथ यथ यथ यथ मः ॥ नि

दिवाकन ॥ नाम यत्न संस्तु नव वं वन वा रु मी दधी
 म व सती ॥ १३ वरु मा रु य म दी व य ॥ म व क च न द व
 नां ग वा का टि म न व यि ॥ यि १३ का टि दु वं गी नां त वृ ली गि
 व द ग न ॥ क म न ॥ लिं ग च न वि धि त न्य व वि धि य वि
 यु धु म सु ॥ न म स्तु व या य ॥ ॥ म सु ल म वा रु म्वा
 न न वृ य ॥ न्या म या य ॥ ल य वृ वृ न म ॥ ना सि य ॥
 डु का ॥ आ त्म त वा य म्वा रु ॥ की वि शी त वा य म्वा रु ॥
 दू नि व त वा य म्वा रु ॥ ॥ क था व गी ल म न ॥

ॐ ति लिं ग च न वि धि १ म मा य ४ ॥

॥

॥

नैऋतमधुपुकाय ॥ अथनित्याश्चतविधिवक्षुः ॥
नामिय ॥ नैऋतं माननवायश्वाह ॥ नैऋतं विद्यानवा
यश्वाह ॥ नैऋतं निवतवायश्वाह ॥ ॥ मृगार्थ
याय ॥ कलैय कायाव मृग्यकर्तन ॥ नैऋतं कीमः मृ
गार्थमृग्यनमः यादुका ॥ ॥ गुरुनमः कव
मगुल्योहावश्वाहन ॥ नैऋतं मृग्यमगुलाकावयाय
यनवकावव ॥ नैऋतं दानितयनमगुलावयनमः ॥
कतहावश्वाहनकय ॥ ॥ मृग्यननवलिम ॥

नैऋतयद्यासनयादुका ॥ नैऋतयद्यासनयादुका ॥ नैऋतकुर्मा
सनयादुका ॥ ॥ नवयवलिमिन ॥ नैऋतकुर्माय
हट ॥ लालकाववलिमिन ॥ नैऋतकुर्माहटवदयः ॥
लेश्वाह ॥ वक्षमकटमृदाहला ॥ ॥ दण्वाव
मृग्यन ॥ नैऋतमकलकलमवलिमिनकुर्माहट ॥
॥ नैऋतमः ॥ नैऋतकुर्मायहट ॥ नैऋतकुर्माहट ॥
नैऋतकुर्मायहट ॥ नैऋतकुर्माहट ॥ नैऋतकुर्माहट ॥
मः यादुका ॥ नैऋतकुर्मायहट ॥ नैऋतकुर्माहट ॥

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 यादृका ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 अथ अंगनामः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 कतवायक ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 अथायक ॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 मि ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

म०॥ नै० क० नि० खा० य० व० य० न० म०॥ नै० क० क० व० य० य० न० म०
०॥ नै० क० नि० ग० य० न० म०॥ नै० क० क० म० य० य० न० म०॥ ॥
व० न० ना० क० त० ध० न० म० द० द० ग० यि० ॥ लै० न० न० य० य० म० स०
क० लो० ना० त० म० द० य० ॥ ०० गि० ज० ल० य० न० य० य० ॥
त० ना० म० य० य० न० य० य० ॥ नि० क० ट० म० द० द० य० ॥ नि० का० ल० मा० नि०
य० ॥ नै० क० य० य० य० य० य० द० क० य० य० य० य० ॥
क० त० न० ॥ नै० क० म० द० द० य० य० न० म०॥ नै० क० म० नि० न०
य० न० म० ॥ नै० क० य० नि० खा० य० न० म०॥ नै० क० म० क० द० य० य०

[illegible][illegible]

वंशयथायविश्रिता । अथकावगतांथवीपीकृदिकानमा
 मृदु ॥ अथकीमन्ताकोलीरुकातीकयालिनी ।
 दन्तकिमानिवाकापीशाह । अथनमाभुन ॥ अथीमवका
 मंभुलान्ककमयदनिहिलानन्यगकिमूनीमानुष्टिन्नाय
 वदुक्तकुकलकलगतयष्टकवायवदुक्त । अथवावष्टय
 वकान्नाष्टयनवदिवदुक्तवैरकतामभुलनमंष्टुष्टयनग
 अतमथदुवैववैरुववैपीकृऊग ॥ कंगन ॥ निन्थाव
 नाविधितन्त्रविधियविष्टुष्टुममु ॥ नमस्कावयाय ॥

[illegible]

॥ अथाहं द्यामशावर्जकं दद्याय नमः ॥
 नैजकीनिवसेच्छाका ॥ नैजकुनिखायवषट् ॥ नैजकु क
 वेयायकु ॥ नैजकु नैजकु यायवषट् ॥ नैजकु ४ अ
 यायट्ट ॥ ००० निजगुणामः ॥ ॥ आर्ककायाय
 सर्वयो नैजकावद्वसयि यावतश्चाल ॥ ३ ॥ नैजकु ४ अ
 यायट्ट ॥ ३ ॥ नैजकु ४ अयायानिमदान ॥
 नैजकु ४ द्याय नमः ॥ आर्कलीन ॥ लायादोय ॥ गाल २
 ॥ लथक गाल २ ॥ सैकावर्जकं मुदानवलि विमर्जनयाय

॥ लीखं नमो वलिभ ॥ नासि यत्नं न द्वा आत्मनवा य
 श्रीरु ॥ रंजकी विद्यागता यश्वरु ॥ रंजकी निवेतवा यश्व
 रु ॥ ॥ लीखं नमो वलिभ ॥ कलेश्वर मधु
 लसत ॥ मृग्यमाथथय ॥ रंजकी मृग्यय मृग्य
 नमः ॥ श्रीनम ॥ मृग्यनमः ॥ ॥ वलिभकाठयानक
 थलास ॥ वगुयुजा ॥ कनठक ॥ कीवगुनाथयनमः ॥
 वलिथासवलिवाय ॥ मृग्ययवजाय ॥ कनठक ॥ ॥
 ॐ नैनिह्यकर्मदवाचनविधिः ॥ ॥ श्रीकृष्णिका श्रीनि

वसु ॥ श्री ३ दशासुसनासु ॥ ॥ मीतलेशी वल्लु कु व
मीकु वी वधु ककु वायधु वधु वा ॥ माय यदयु क यु
लु मासी मयु यदा न दिने इ वा ॥ मीतलेशी माय यदयु क यु लु मा
मीकु क ॥ ॥ मीतलेशी माय यदयु क यु लु मा

विजय नो जगद्विवाय मा सु लीध मवकन मयव कन मा
उत्तमा हि नो लु र ॥

ॐ अ व द्या ली य धू काद वम स हि ना ला जा च मा रु
ध वी । की मा वि नि नि या व कस्य वम ॐ ना या य वि का
वर्ज । वा वा हि क ल मा य कस्य क थि ग ॐ ॐ ॐ
काय नि । वा मू ली व ल का ल मा य स हि गै ल श्री ध्व णा
ल क क । य धू क ग य नि क थि व व गु की गै य धी म वा न
मी रु व म स य वि क क ल व ली मी स हि ना री व वी । सा
का य वि मू ला कू जा र ग व नि द वा सू र वा ॐ न । व म

श्रीमन्मयश्च कस्यह विष्णोस्तानन्द कायी सदा । उल्य
याज्जकुला कृति ध्वंस कला सर्व ह्नुस काधिना । एता
एव कुला लु वन क धिना सर्वार्थसिद्धिदा ॥ ० ॥

ॐ श्रीं रं द्वां श्रीं रिमलान वृकादयमहा रेलवा
यस्वारा वृ याद्र कायुजया मि ॥ ३ ॥ वलि ॥
जाय ॥ म्वाहा ॥ २१ ॥ स्तुति ॥ माया ना वि
घनि ह्नु ना न यान्दवाना ठि ग्राम नि । कोय वा
मानसं द्वा रं वन्दे ह्नु डाय नियीय ॥ श्रीम वना
॥

天々々々



२४३३ नाममात्र

२५॥ भासश्च न युगात् ॥ (लेख)

ASHA ARCHIVES

1915 I

ՀԱՆՐԱՊԵՏ

मध्यमनविधिः॥ कृतिलाकानमिय॥ सुकुंवालेभान
 वीव२४॥ श्रावमिय॥ नामिय॥ निगवने॥ मंगकिडिय॥
 मरु॥ गमवुमसकआलिनिवविमसमानिव। मृयना
 मसकआलिनिखावर्थकवामरु॥ नामिय॥ याण
 आमरुना॥ नाम॥ लीयसनिकागवाय॥ मीधमावा
 रुन॥ गमवयमनावेवगदावलिमवमृगी। निर्मय
 सिन्धकावकिजलेमिनसनिधीमव॥ लीयसुवालेद
 धन॥ धनयुजायाहो॥ वममृमृदानकायायावमृ

ल म नु ण व ष ड् अ य व य ॥ स वृ क स भु ल मृ द वी
 यो व व यं मृ क ग मृ द न कृ का मृ मृ न आ ज लं य ॥
 डं मृ मृ न मृ मृ मो क व मृ मृ न व वि लि मृ मृ न ग्रा व
 य ग्री व य मृ क ॥ ध्रु व र्थ ध्रु न मृ द क न ॥
 लं य द्या ग लं आ क व र व द्या मृ र्थ वि य ॥ श्री न व द्या
 य लं द म र्थ न म ॥ ३ ॥ व नृ ण य म वि य ॥ श्री व नृ
 ण द व मा य लं द म र्थ न म ॥ ३ ॥ वा य ॥ डं मृ
 मृ न म मृ क ल यो य द्या (ध्रु म न का म न । मे र्थ श्री

मन्वासीर्गं कव्यीत्यर्थः स्मिन्मार्थः श्रानमर्हकविद्य ॥
 यस्मिन्वाद्यानि मीथानिर्गन्गोद्योः सक्सागवाः ॥ आगद्युक्त
 यावेणार्थः श्रानकालसदामम ॥ थमयेत्यं माठक्य ॥
 मूलमन्वगानिवसक ॥ सद्दयसयुष्ट्युष्टयाश्च याल
 सुयालपिय ॥ सद्दमानुसद्दय ॥ धनलिदवयामर्त
 खर्तन ॥ धनलिद्विष्टवर्तण ॥ दववर्तण ॥
 र्वाग्निश्रानविधिः ॥

मधुदयमाधुनी ॥ विक्रान्तुं वदुवयुवाय ॥
 यथायते ॥ युवा ॥ वाधायामि ॥ अ० ॥ व० ॥
 व० ॥ व० ॥ युवक ॥ कृष्णक ॥ कोसाहेय ॥
 न्याम ॥ विक्रान्तुं वदुवयुवाय ॥ लाहाने ॥ म० ॥
 न० ॥ को० ॥ को० ॥ व० ॥ व० ॥ व० ॥ व० ॥ व० ॥
 न० ॥ व० ॥ व० ॥ व० ॥ व० ॥ व० ॥ व० ॥ व० ॥
 वियातय ॥ विधि विधि ॥ व० ॥ व० ॥ व० ॥ व० ॥
 वयादका युवायामि ॥ न० ॥ व० ॥ व० ॥ व० ॥ व० ॥

अथ या न या दू का मृज या मि ॥ नै अ सां द्र द या य न म ४
 ॥ नै अ मी नि व से वा रु ॥ नै अ मृं लि खा य व ष ट ॥ नै अ म
 क वा वा य मृं ॥ नै अ सां न रा य वी ष ट ॥ नै अ मे ४ अ मृ
 य रु ट ॥ नै अ मृं मृं मृं मृं नृं य व व नो य या दू का मृज
 या मि ॥ नै अ न अ हि अ मृ तं अ मृ तं अं नी अ मृ ता रु व
 अ मृ तं अ नृ यि लि अ मृ ता व रु अ मृ तं धी वं य २ दा व य
 दा व य अ मृ तं क नृ क नृ वा र्मं ए क्क ए क्क दा र्मं मृ व मृ व
 कां की क्क क्क क्क ४ रु त मं ल क्क क्क य वि मो व य वि

मात्रय ०० द्दव्यं पाविर्गुक्कं वृष्टा ॥ ३ ॥ धर्मं
गुनस्य लकोपायावयवविगुयोय ॥ धानि धिने मदाक
न ॥ धर्मरुटिकाभाय ॥ विद्यु विद्यमानस ॥ नृज सुगुन
यादकायुज्यामि नय्यामि ॥ यवमगुन यादकायुज
यामि नय्यामि ॥ यवमगुन यादकायुज्यामि नय्या
यामि ॥ यवमगुन यादकायुज्यामि नय्यामि ॥
दिवायमिदोयमानोयादिगुन यादकायुज्यामि नय्या
यामि ॥ धीनिवृष्टा नय्यदवयोदकायुज्यामि नय्या

मि ॥ ३ ॥ नृज सुगुन यादकायुज्यामि ॥ ३ ॥
धर्ममालस ॥ नृज सुगुन यादकायुज्यामि ॥ १० ॥
नृज सुगुन यादकायुज्यामि नय्यामि ॥ १० ॥ विद्यु न
नमः ॥ मिदोयमानोयादिगुन यादकायुज्यामि ॥ ३ ॥
गुदिवानय ॥ नृज सुगुन यादकायुज्यामि ॥ ३ ॥
नवायनिवाहं स्वाहा ॥ नृज सुगुन यादकायुज्यामि ॥ ३ ॥
नृज सुगुन यादकायुज्यामि ॥ ३ ॥ ॥ धर्मनियमालका

अ॥ मयलहावर्षाभाकयायश्रुगालधाय॥ ३ ॥ गटिभ
 अथम॥ श्रुयागालवोमिनामुयाव॥ ॐ निवद्यासाधनवि
 वि॥ ॥



[illegible]

महा हा॥ का सिया था दसि॥ खुं श्रीं उं डों श्रीं
 हं श्रीं श्रीं डों श्रीं उं डों श्रीं
 महा था दसि का नि या॥ र्कां कों श्रीं
 श्रीं॥ सिद्धि लक्ष्मी या॥ उं डों श्रीं
 कों कों नम॥ न वा क नि॥ उं श्रीं
 डों॥ निर्वीन सिद्धि लक्ष्मी या॥ उं
 श्रीं श्रीं श्रीं नम॥ का नि या निर्वीन॥ अ मा वा स

[illegible]

दुर्गाय ॥ ३ ॥ यच्चि मनिर्ज्ञाना जाय ॥ द्यौः सारदा ॥
 उँ नुँ कुँ माँ उग्र द्यौः उग्र वली नि नुँ यूमदनी
 इँ इँ सदान कर उँ त्याँ माँ हतः मृ पुरुष न
 म ॥ उग्र यँ लि या ॥ नुँ नुँ माँ नुँ नुँ नुँ नुँ नुँ
 हँ न वाय न म ॥ नुँ नुँ नुँ नुँ नुँ नुँ नुँ नुँ
 सिद्धि म हा या माँ नि नुँ कि नुँ नुँ नुँ नुँ नुँ
 म ॥ पादुका ॥ ७ ॥ उँ नुँ नुँ नुँ नुँ नुँ नुँ नुँ

[illegible][illegible]

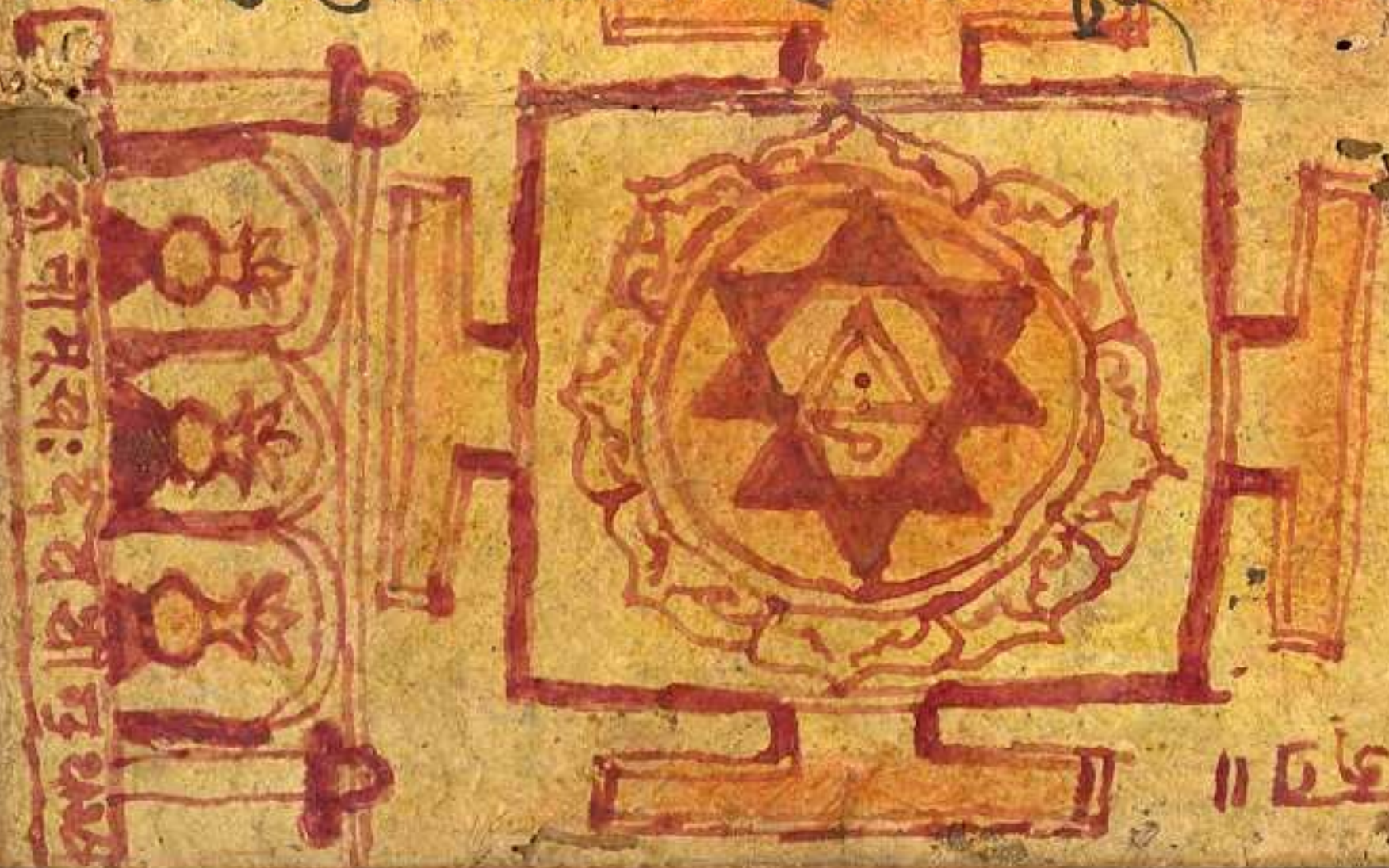
वलिगृह २ साहा ॥ जंजं गं श्रं श्रं डां डीं श्रं
दुं जा लं धल दिय का लि नी दं वो जा ला दं दं
वुं पुं यो न यो दुं कां वलिगृह २ साहा ॥ सं ११२ वेदं
सं ११२ वेदं ११२ वेदं ११२ वेदं ११२ वेदं
य विं ग य ना य मा न या न वि या न क मा या य
का सि ना ॥ वा न न था या वि या थ म व स क न्य

[illegible]

Handwritten text in a cursive script, likely a form of shorthand or a specific dialect. The text is arranged in approximately 10 horizontal lines, with characters written in dark ink on aged, yellowed paper. The script is highly stylized and difficult to decipher without a key.

[illegible]

मलकान्तकालेन विष्णुः ॥
 विष्णुर्देवतायाः विष्णुर्देवतायाः
 मलकान्तकालेन विष्णुः ॥
 विष्णुर्देवतायाः विष्णुर्देवतायाः



॥ ॐ नमः ॥